महान गुरु की महान शिष्य महुआ शंकर

कत्थक नृत्य सीखाता है भारतीय संस्कृति के संस्कार

महुका शंकर से दीपक मेहरा की विशेष भेंट वार्ता

कोई जमाना था जब राजा महाराजा के दरबारों में कत्थक नृत्किय लोगों का मनोरंजन करती थी। उस जमाने में मनोरंजन का साधन केवल कत्थक नृत्य ही होता था। परंतु वक्त व हालातों की जैसे ही करवट बदली कत्थक नृत्य धीरे-धीरे पीछे की ओर चला गया और उसके स्थान पर विदेशी डांस व संगीत ने लोगों के दिलों में अपनी छाप बनानी शुरु कर दी। परंतु देश के जाने-माने पदम भूषण अवार्ड से सम्मानित पंडित बिरजू महाराज ने भारत की इस अमूल्य की धरोहर को आज भी संभाला हुआ है। इसकी जीती जागती एक मिसाल देश-विदेशों में कत्थक नृत्य से लोगो में अपनी छाप छोड़ने वाली प्रसिद्ध कत्थका नृत्यिकय महुआ शंकर। जिन्होंने भारत के साथ-साथ वैस्ट इंडीज, वैन्कोवर, लंदन, अमेरिका, यूरोप, कीनिया, बैल्जियम में अपने कत्थक नृत्य से लोगों की वाहवाही लूटी है। देश की जानी-मानी कत्थक नृत्यिका महुआ शंकर शुक्रवार को स्थानीय स्प्रिंग डेल सीनियर स्कूल में अपना कत्थक नृत्य पेश करने के लिए पंजाब में तथा खासकर गुरु की नगरी में पहली बार पहुंची थी। इसी मौके का लाभ उठाते हुए दैनिक उत्तम हिन्दू ने उनके कुछ विशेष पहलुओं पर रोशनी डाली। जिस दौरान उन्होंने बताया कि वह उस महान गुरु की शिष्य है जिनके नाम से भारत गौरव महसूस करता है। उन्होंने कहा कि भले ही आज समय में परिवर्तन आने के कारण कत्थक नृत्य को लोग इतना पसंद नहीं करते परंतु वह दिन दूर नही जब कत्थक नृत्य लोगों के बीच पहले जैसी अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो जाएगा। वक्त फिर करवट बदलकर उसी स्थान पर जा रहा है जहां पर कत्थक नृत्य को लोगों का मनोरंजन का सबसे महत्वपूर्ण माना जाता था। उन्होंने कहा कि भले ही आज आईटम डांस, फोक डांस के अलावा वेस्टर्न म्यूजिक को लोग पसंद कर रहे है परंतु अब लोग इस अश्लील डांस से तौबा कर रहे है तथा इसी की उदाहरण यह है कि आज बॉलीवुड में दोबारा से कत्थक नृत्य व सूफी संगीत अपनी धीरे-धीरे पहचान मजबूत कर रहा है। उन्होंने कहा कि अभी हाल में रिलीज हुई बॉलीवुड की मशहूर फिल्म माई नेम इज खान इसी की एक उदाहरण है। उन्होंने कहा कि भले ही नौजवान पीढ़ी शकीरा डांस को देखकर कुछ समय के लिए मनमोहित हो जाती है परंतु बॉलीवुड की अभिनेत्री राखी सावंत तथा मल्लिका शेरावत जैसी आईटम गर्ल्स कुछ समय के लिए ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकती है क्योंकि अश्लीलता को देखने वाले लोगों की संख्या हमेशा ही कम होती है। उन्होंने कहा कि भारत एक संस्कारों वाला देश है तथा यहां की मिट्टी से भी संस्कारों की खूशबू आती है। उन्होंने अपने बारे में बताते हुए कहा कि कत्थक नृत्य उन्होंने अपनी मां रेखा शंकर से सीखा है। इसके अलावा उन्होंने अपने पिता प्रदीप शंकर से भी कत्थक नृत्य कला की शिक्षा ली है। उन्होंने कहा कि उनके घर में संगीत का माहौल बन रहा है तथा जिस कारण वह मात्र पांच साल की आयु में ही कत्थक नृत्य सीखना शुरु कर दिया था। उन्होंने कहा कि आज महुआ शंकर की पूरी दुनिया में कत्थक नृत्य की पूरी दुनिया में पहचान है जिसका सारा श्रेय उनके गुरु पंडित बीरजू महाराज तथा लच्छू महाराज, आचार्य महाराज, शंभू महाराज के अलावा उनके पारिवारिक सदस्यों को जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि आज वह समय आ गया है कि अपने बच्चों को भारत की अमूल्य धरोहर कत्थक नृत्य से रुबरु करवाए तथा हम सबको समाज के प्रति अपनी-अपनी

जिम्मेदारी को समझते हुए बच्चों के अंदर कत्थक नृत्य तथा अपनी मातृ भाषा हिन्दी के प्रति वह बीज बोए जोकि युगो-युगों तक भारत की संस्कृति को जीवित रख सके। उन्होंने यह भी कहा कि आज कई प्रसिद्ध टीवी चैनल अपनी टीआरपी बढ़ाने के लिए तथा अधिक से अधिक पैसा कमाने के लिए भारत की धरोहर संगीत के साथ खिलवाड़ कर रहे है क्योंकि जिस तरह देश के कई जाने-माने टीवी चैनलों पर रियाल्टी शॉ प्रसारित किए जाते है वह सिर्फ पैसा कमाने का ही माध्यम है जबकि अधिकतर रियाल्टी शॉ में सच्चाई कोसो दूर होती है। उन्होंने कहा कि उन्हें भी रियाल्टी शॉ में जज की भूमिका निभाने का मौका मिला था परंतु जब उन पर इस बात का दबाव डाला गया कि वह निर्णायक की भूमिका निभाते हुए अंतिम निर्णय उनकी इच्छानुसार घोषित करे तो उन्हें सुनकर काफी हैरत हुई। क्योंकि जिस रियल्टी शॉ के लिए उन्हें जज बनाया गया था उस शॉ में कई कलाकार ऐसे थे जोकि पहले स्थान अपना मुकाम रखते थे। उन्होंने यह भी कहा कि जब भी किसी बड़े सेलब्रेटी की छोटी से छोटी बात को भी मीडिया में बार-बार दिखाया जाता है और उस सैलीब्रेटी के नाम से अपनी टीआरपी बनाने के लिए मीडिया कई तरह के हथकंडे अपनाती है। जबकि देश के कई ऐसे सैलीब्रेटी है जो देश का नाम रोशन करने तथा पूरी दुनिया में भारत की पहचान बनाने में पूरी जिंदगी बीता रहें है उनके बारे में कभी भी मीडिया में कोई लेख या प्रसारण नहीं होता। क्योंकि टीवी चैनलों की टीआरपी नहीं बढ़ पाती। इसीलिए देश के कई महान संगीत व कत्थक नृत्य की जानी मानी हस्तियां लोगों से काफी दूर है। क्योंकि उनकी पहचान ज्यादा नही बन पाई। उन्होंने कहा कि बच्चों के अभिभावकों को चाहिए कि वह हिन्दी भाषा को बोलने में न रोके क्योंकि किसी भी देश के नागरिक की पहचान उनकी मातृ भाषा तथा उनके संस्कारों से मिलती है। उन्होंने यह भी कहा कि आज के आधुनिक युग में अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता दी जाती है, परंतु यह जरुरी नहीं कि जिस इंसान को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं वह जीवन में तरक्की नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि आज उनका जीवन धन्य हो गया है कि वह गुरु की नगरी में पहुंची है और अपना कार्यक्रम समाप्त करने के उपरांत श्री हरिमन्दिर साहिब में गुरु जी का आर्शीवाद लेने आवश्य ही जाएंगी तथा देश के प्रति अपनी जिम्मेवारी को निभाते हुए ऐतिहासिक स्थल जलियांवाला बाग शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए भी जाएंगी। पंजाबी स्वादिष्ट पकवानों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि आज उन्हें मौका मिला है कि आज वह पंजाबी पकवानों का लुत्फ ले सके।